

॥ अथ राग ही दो रोली व्युत्तः ॥ हरी कुलत ही दोले  
 मंनने ॥ हरी कुलत ही दोले मंनने ॥ मंनने मंनने  
 मंनने हरी कुलत ही दोले मंनने ॥ आपन्न रूप  
 पधरी वीचरत ॥ वीवीधी भात्यधरी तंनने ॥ हरी  
 १ ॥ स्थावर जंगम कीट पतंग लौ ॥ अंतसकरण  
 आनंदने ॥ यी रथावर जंगम जीतती तरत ॥  
 फरत सकल आधीनने ॥ हरी ॥ २ ॥ तैत्री शक्रोड  
 देवस्य सी सुरज ॥ रहत वास मध्य सुंतने ॥ वैभ  
 वकाज फरत ही लो लवस ॥ धावत चाहावत आ  
 न्यने ॥ हरी ॥ ३ ॥ बुंसावी सुमाहेश्वर ईश्वर ॥ पाये  
 अचल आसंनने ॥ कबहुक काज करन कुधर  
 न पर ॥ आवत जंन वचंनने ॥ हरी ॥ ४ ॥ सुक्ष्म सु  
 सकारण माहाकारण ॥ चतुर माहा लसी घासं  
 नने ॥ परणव ही चगगंन मध्य बोधो ॥ सुरत की  
 दोरी वेचंनने हरी ॥ ५ ॥ सगुंन ही दोल वेगतनी  
 रगुण घंन ॥ चलन ही सुध्य चेतंनने ॥ आवंन जा  
 वंन दी सत तंन के संघ ॥ ईडु अपके जौं समधुने ॥ ह  
 री ॥ ६ ॥ समलीत बुंसा नां मरुप गुण लौ ॥ यो होचे  
 बुध्य वरतनने ॥ के हं कुवेर नां मरुप गुण पर ॥ ल  
 गतन लेष अवधने ॥ हरी कुलत ही दोले मंनने  
 पद ॥ १ ॥ संपुर्णः ॥ समाप्तः ॥